

क्रमिक पुस्तकमाला - बरखा  
पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए



क्रमिक पुस्तकमाला - बरखा

समन्वयक - लतिका गुप्ता

प्रकाशक एन.सी.ई.आर.टी.

प्रकाशन वर्ष अक्टूबर 2008

शब्द चिह्न रीडिंग डेवलपमेंट सैल

मूल्य एक किताब का मूल्य - 10 रु./-

(400 रु. प्रति सैट)

ISBN 978-81-7450-898-0 (सैट)

संस्करण प्रथम

पृष्ठ संख्या पुस्तकमाला की हर किताब 16 पृष्ठ की है।

वर्गीकरण पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए

क्रमिक पुस्तकमाला (40 पुस्तकें)

भाषाओं हिंदी

में उपलब्ध

# बरखा

पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए  
क्रमिक पुस्तकमाला



पढ़ना है समझना

रीडिंग डेवलपमेंट सेल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्



## बरखा

### पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए क्रमिक पुस्तकमाला

पहली कक्षा में प्रवेश लेते समय बच्चे अपनी भाषा के बहुत सारे शब्दों के अर्थ जानते हैं। वे चीजों को उनके संदर्भ में यानि उनके व्यावहारिक रूप में पहचानते हैं और अपने घर में बोली जा रही भाषा की वाक्य संरचना को भी जानते हैं। स्कूल को यह ठोस भाषायी नींव हरेक बच्चे में तैयार मिलती है। यदि स्कूल इस नींव को आधार बनाकर चले तो सभी बच्चों को चंद महीनों में ही पढ़ना-लिखना सिखाया जा सकता है लेकिन प्रायः ऐसा होता नहीं है। हम सभी इस सच्चाई से वाकिफ़ हैं कि हमारे स्कूलों में आने वाले अधिकतर बच्चे पाठक नहीं बन पाते। पाँचवीं तक आकर भी बहुत सारे बच्चे अक्षर पहचानने पर ही अटके रहते हैं और जो पढ़ना सीख भी लेते हैं, वे सही मायनों में सफल पाठक नहीं बन पाते। पाठक न बन पाने से हमारा आशय है कि बच्चों में पढ़ने की आदत और पढ़ने से मिलने वाली खुशी की लालसा पनप ही नहीं पाती।

स्कूलों की इस निरंतर चल रही गहरी असफलता को हमें अब रोकना है और





इसे हम रोक सकते हैं। अगर हम पढ़ना सिखाते समय बच्चों के उस ज्ञान और अनुभव को कक्षा में स्थान दें जिसका जिक्र ऊपर किया गया है। ऐसा करने से वे उसी सहजता से पढ़ना सीख जाएँगे, जिस सहजता से वे घर में बोलना सीख चुके होते हैं। स्कूल के शुरुआती कुछ महीनों में ही हरेक बच्चा समझ के साथ पढ़ना सीख सकता है। जरूरत है, स्कूल के प्रयासों में गहनता लाने की और बच्चों को पढ़ना सिखाने की अक्षर पद्धति से आजाद होकर एक नए सिरे से सोचने की। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। बच्चों की पढ़ना सीखने की नैसर्गिक क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए बरखा क्रमिक पुस्तकमाला तैयार की गई है। इस पुस्तकमाला का आधारभूत विचार है कि **यदि बच्चे शुरू से ही समझ और मज़े के साथ पढ़ें तो वे बहुत जल्दी पढ़ना सीख जाएँगे और सफल पाठक बन जाएँगे।** क्रमिक पुस्तकमाला एक शिक्षाशास्त्रीय संसाधन है जिससे पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद मिलेगी और उनमें ज्यादा से ज्यादा पढ़ने की ललक जगेगी।

### **बच्चे पढ़ना कैसे सीखते हैं?**

पढ़ने की प्रक्रिया में अनुमान लगाने की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पढ़ना





सीख रहे बच्चों को शुरू से ही पाठ्यसामग्री में अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर मिलने चाहिए। आमतौर पर ऐसा होता नहीं है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को सिर्फ अक्षरों को ध्वनियों से जोड़ना सिखाया जाता है। यह मान लिया जाता है कि अक्षरों और ध्वनियों का संबंध बिठाते-बिठाते बच्चे धीरे-धीरे पढ़ने लगेंगे। इस तरीके से बच्चे अक्षर जोड़ते हुए पढ़ना सीख जाएँ तो भी वे पाठक नहीं बन पाते हैं। पढ़ी हुई सामग्री को समझकर, उस पर अपनी राय बना पाना तो बहुत दूर की बात है। इसका एक कारण यह है कि हम पढ़ते समय अनुमान लगाने का प्रशिक्षण देने पर कभी ध्यान ही नहीं देते। बल्कि यदि बच्चा अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करता है और उसमें कोई गलती करता है तो उसे टोक दिया जाता है।

बरखा के तहत यह प्रयास किया गया है कि बच्चों को इस पुस्तकमाला की कहानियों को पढ़ते समय पाठ्यसामग्री के बारे में अनुमान लगाने के भरपूर मौके मिलें। बच्चे अनुमान लगाते समय अपने अनुभवों, व्यावहारिक ज्ञान और भाषा के मौखिक रूप की जानकारी को उपयोग में ला पाएँगे। इसलिए सारी कहानियाँ बच्चों के दैनिक अनुभवों के आधार पर ही रची गई हैं। पढ़ने के कौशल का बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है।





बच्चों को जब स्वयं पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलेंगी तो न केवल उनकी पढ़ने की क्षमता विकसित होगी, बल्कि स्कूली ज्ञान के हरेक क्षेत्र में उनको लाभ मिलेगा।

### **बरखा की कहानियों का स्वरूप**

बरखा में चालीस कहानियाँ हैं जो पाँच कथावस्तुओं और चार स्तरों में विभाजित हैं। स्तरानुसार कहानियों में वाक्यों की संख्या एवं कथानकों की गूढ़ता बढ़ती जाती है। प्रत्येक कथावस्तु में दो मुख्य पात्र हैं जिनके द्वारा कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं। जमाल और मदन पड़ोस में रहने वाले दोस्त हैं जो खाने की चीजों में बहुत रुचि लेते हैं। इसी तरह रमा और रानी दो बहनें हैं जिनके दैनिक जीवन पर आधारित कहानियों में यह बिंदु उभरता है कि बच्चे अपने आस-पास मौजूद हरेक चीज़ और इंसान से बराबर का रिश्ता महसूस करते हैं और उनसे जुड़ी हर छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देते हैं। काजल और माधव भाई-बहन हैं जिनके दृष्टिकोण से हम बच्चों के उस सुख को महसूस कर सकते हैं जो उन्हें जानवरों और पक्षियों को देखकर तथा उनके साथ रहकर मिलता है। जीत और बबली के द्वारा बच्चों के विभिन्न तरह के खेल और उनसे जुड़ी हुई मजेदार तरकीबों के बारे में पता





चलता है। तोसिया और मिली दो सहेलियाँ हैं जो किसी भी सामान्य लड़की की तरह अपने आस-पास की हर चीज़ के बारे में जानना चाहती हैं और उसके टूटने या बिगड़ने की चिंता न करके उसमें खेल के मौके ढूँढ़ लेती हैं। बरखा की कहानियों के चार स्तर हैं। वाक्य संरचना, शब्दों की संख्या, उपकथानकों की संख्या और गहनता के आधार पर इन कहानियों का स्तर निर्धारित किया गया है। जैसे-जैसे स्तर बढ़ता है, वाक्यों एवं कहानी के उपकथानकों की संख्या बढ़ती जाती है।

**पहला स्तर** – इस स्तर पर दस कहानियाँ हैं। हरेक कथानक की दो-दो कहानियाँ हैं। कहानियों में हरेक पृष्ठ पर एक चित्र और वाक्य दिया गया है। पूरी कहानी में सिर्फ़ एक घटना या समस्या उभरती है। वाक्य संरचना में काफ़ी दोहराव है जिससे बच्चों को पढ़ने में मदद मिलती है।

**दूसरा स्तर** – इस स्तर पर दस कहानियाँ हैं। इसमें भी हरेक कथानक की दो-दो कहानियाँ हैं। कहानियों में प्रत्येक पृष्ठ पर दो वाक्य हैं और शब्दों की संख्या बढ़ा दी गई है। इसमें भी प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र दिए गए हैं। वाक्य संरचना में दोहराव है पर पहले स्तर के मुकाबले थोड़ा कम। इस स्तर पर भी कहानियों में एक ही घटना या समस्या का ज़िक्र है।







**तीसरा स्तर** – पिछले दो स्तरों की तरह इस स्तर पर भी दस कहानियाँ हैं और हरेक कथानक की दो-दो कहानियाँ हैं। कहानियों में हर पृष्ठ पर तीन वाक्य हैं। कहानियों में एक बड़ी घटना के अंदर दो-तीन छोटी घटनाओं का विस्तार किया गया है। नए शब्दों की संख्या दूसरे स्तर के मुकाबले ज़्यादा है। इसमें भी हरेक पृष्ठ पर चित्र दिए गए हैं।

**चौथा स्तर** – इस स्तर की दस कहानियों में हरेक पृष्ठ पर एक चित्र और चार वाक्य हैं। कहानी में दो-तीन छोटे-छोटे कथानक हैं जिससे नए शब्दों की संख्या भी बढ़ गई है। कहानी के कथानकों में दोहराव रखा गया है लेकिन वाक्य संरचना में दोहराव बहुत कम है।

बच्चे जब एक स्तर की कहानी पढ़ लेने के बाद अगले स्तर की किताबें उठाएँगे तो खुद उनका मनोबल बढ़ेगा कि वे आगे बढ़ें। उन्हें इस बात की छूट होगी कि वे पहले पढ़ी गई किताबों को फिर से दोबारा पढ़ सकते हैं। पढ़ी गई चीज़ को इच्छानुसार बार-बार पढ़ने का शैक्षिक महत्त्व होता है, लेकिन ऐसी छूट स्कूलों में मिलने वाली पाठ्यसामग्री में कम ही मिलती है। ऐसी छूट देने से न केवल बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है कि वह पहले पढ़ी हुई चीज़ को बेहतर समझ पाया बल्कि उसको कई अवधारणाओं को नए दृष्टिकोण से समझने का मौका भी मिलता है।







### बरखा में बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभव

बरखा की कहानियाँ बच्चों के परिवेश और उनके रोज़मर्रा के अनुभवों के इर्द-गिर्द बुनी गई हैं। अपने परिवेश और अनुभवों को कहानियों में पाकर बच्चों को अनुमान लगाते हुए समझकर पढ़ने में मदद मिलेगी। बरखा के सभी पात्र छोटे बच्चे हैं जो हमारे पाठक बच्चों की उम्र के ही हैं। कहानियों को रचते समय यह बात सबसे ज़्यादा ध्यान में रखी गई है कि प्रत्येक कहानी ऐसी छोटी-सी चीज़ या घटना पर आधारित हो जो इस उम्र के बच्चों को बहुत महत्वपूर्ण और रोचक लगती है। घटनाओं को बच्चों की नज़र से विस्तारित किया गया है। अगर कोई चीज़ ज़मीन पर गिर जाए तो बच्चे बड़ों की तरह सफ़ाई करने के लिए व्यग्र नहीं होते। चिड़िया का अंडा दिखने पर बच्चों की खुशी की सीमा नहीं रहती और उसे बिल्ली या कुत्तों से बचाने की ज़िम्मेदारी खुद ही महसूस करने लगते हैं। ऐसी स्थितियों में बच्चे जिस तरह के काम करते हैं, वही इन कहानियों का मुख्य तत्व है।

### कहानियों में दोहराव

बच्चे अपने आप को कहानियों से जोड़ पाएँ, इसके लिए परिचित संदर्भों का इस्तेमाल किया गया है। कहानी को चित्रों की मदद से समझने के बाद बच्चे





जब दोहराए गए वाक्यों पर बार-बार नज़र डालेंगे तो वे स्वतः समझ जाएँगे कि नीचे क्या लिखा हुआ है। कहानी समझने के साथ-साथ बच्चे कुछ सरल वाक्यों को पढ़ना भी सहजता से सीख जाएँगे। बरखा की कहानियों में सभी वाक्य आम बोलचाल की भाषा के हैं। इससे बच्चों को मौखिक और लिखित भाषा में तालमेल बैठाने में मदद मिलेगी। वे सहज रूप से यह जान जाएँगे कि बोली हुई बात को कैसे लिखा जाता है।

### **चित्रों में कहानी**

बरखा के चारों स्तरों की सभी कहानियों में प्रत्येक पन्ने पर एक चित्र दिया गया है। स्कूल के शुरुआती दौर में जब बच्चे लिखित सामग्री नहीं पढ़ पाते हैं, तब भी वे चित्रों की मदद से कहानियों को समझ लेंगे। इस अपेक्षा के साथ बरखा में चित्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। चित्रों को कहानी की घटनाओं तक सीमित नहीं रखा गया है बल्कि उनमें ज़्यादा से ज़्यादा जीवंतता लाने की कोशिश की गई है, जिससे चित्र असली जीवन की झलकियाँ दिखा पाएँ। इससे बच्चों को चित्रों का मज़ा लेने, कहानी समझने और चीज़ों के बारे में बात करने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। चित्रों में बच्चों को गरिमा के साथ प्रस्तुत किया गया है। उनकी बालसुलभता न बढ़ा-चढ़ा कर दिखाई गई है और न ही उसे घटाया गया है। कहानियों में अक्सर बच्चों को रूढ़ रूप





में प्रस्तुत किया जाता है पर बरखा में बच्चों की प्रस्तुति सामान्य जीवन जैसी ही की गई है। इससे पाठक बच्चे कहानी से बेहतर रूप से जुड़ पाएँगे और पात्रों में अपना प्रतिबिंब ढूँढ़ पाएँगे।

### **भाषा में नैतिकता एवं मूल्य**

यह एक आम मान्यता है कि बच्चों को जो भी पढ़ने के लिए दिया जाए, उससे वे कुछ-न-कुछ सीखें ज़रूर। बरखा की संकल्पना और कहानियों की रचना-प्रक्रिया, दोनों स्तरों पर बच्चों को मूल्य सिखाने के वयस्कों के सामान्य आग्रह से बचने की भरसक कोशिश की गई है। जीवन की सरलता और बच्चों की छोटी-छोटी खुशियों को भाषा में पिरोने का प्रयास किया गया है। भाषा अपने आप में एक संस्कार है। प्रकाशित सामग्री की भाषा बच्चों के अनुभवों को जुबान दे सके, उनके मन को स्पर्श कर सके, यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती है। कौन बच्चा नहीं चाहता कि वह साहसी बने, निर्भीकता से खतरों का सामना करे, कठिन परिस्थितियों में भी न घबराए और बड़ों के सामने अपनी बात दृढ़ता से रख पाए। सभी बच्चे अपने सामान्य जीवन में ऐसे छोटे-छोटे प्रयास करते रहते हैं। बच्चों की इसी अभिलाषा और सहजता को बरखा में स्थान दिया गया है।





बरखा की कहानियों में मूल्य इस तरह पिरोए गए हैं कि मानवीय संवेदना स्वयं ही उभर आती है। मिसाल के लिए तबला कहानी में जीत का अपने पिता की तबला बजाने की कला को स्वयं सीखने की इच्छा रखना अपने आप में एक बहुत बड़ा मूल्य है। नानी का चश्मा कहानी में रमा जिस चिंता और व्यग्रता के साथ अपनी नानी का चश्मा ढूँढ़ती है, उससे एक बुजुर्ग के प्रति एक छोटे बच्चे की संवेदनशीलता उभरती है। तालाब के मजे कहानी में काजल और माधव जब बगुलों को उड़कर जाते हुए देखते हैं और अपने आप को समझाते हैं कि बगुले अगले साल फिर आएँगे तो स्वतः ही इंतज़ार करने, प्रकृति के चक्र को समझने और दूसरे को उसकी इच्छा और ज़रूरतों के साथ स्वीकार करने का मूल्य उभर आता है। इस तरह के मूल्य बच्चों की जिंदगी में सहज रूप से शामिल रहते हैं। बच्चों की सहजता, उनकी ईमानदारी, हर समय कुछ नया सीखने की चाह, बड़ों का प्यार पाने की इच्छा और हर काम खुद करने की चेष्टा, उन सबसे बड़े नैसर्गिक संस्कारों और मूल्यों में से हैं जिनके द्वारा अध्यापक और माता-पिता बच्चों के संस्कारों को समझ पाएँगे।

### पढ़ने के संसाधन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के तीसरे अध्याय में बच्चे पढ़ना





क्यों नहीं सीखते? शीर्षक के तहत यह सिफ़ारिश की गई है कि कक्षा में छपी हुई सामग्री की बहुतायत हो, संकेतों, चार्ट, कार्य संबंधी सूचना आदि उसमें लगे हों ताकि विभिन्न अक्षरों की ध्वनियाँ सीखने के साथ वे लिखित संकेतों की पहचान भी कर सकें। आज स्कूली व्यवस्था में इन सभी महत्वपूर्ण तथा उपयोगी संसाधनों का अभाव है, जो बच्चों के विकास के लिए ज़रूरी होते हैं। प्रायः संपन्न वर्गों के बच्चों को ऐसे संसाधन घर पर ही मिल जाते हैं, जैसे- किताबें, पत्रिकाएँ, अख़बार और उनको नियमित रूप से पढ़े जाने की परिवारजनों की आदत। ग्रामीण एवं शहरी निर्धन वर्ग के बच्चों के जीवन में इस तरह के संसाधनों का अभाव रहता है। चालीस किताबों की इस पुस्तकमाला को कक्षा में रखने से संसाधनों के इस अभाव को दूर किया जा सकता है। बच्चों को पुस्तकमाला मिलने से माता-पिता में भी यह विश्वास पैदा होगा कि उनके बच्चों के पास पढ़ने की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। बरखा पुस्तकमाला से बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने की आदत डालने और स्थायी पाठक बनाने में मदद मिलेगी।

### **शिक्षकों की भूमिका**

बरखा पुस्तकमाला इस उद्देश्य के साथ विकसित की गई है कि इससे





शिक्षकों को पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं को पूरा करने में मदद मिले। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि पुस्तकमाला पाठ्यपुस्तक नहीं है। इस पुस्तकमाला को एक पूरक सामग्री के रूप में देखा जा सकता है, जो बच्चों को पढ़ने के लिए दी जानी है। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे इस क्रमिक पुस्तकमाला को कक्षा में ऐसे स्थान पर रखेंगे जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें। शिक्षक बच्चों को बरखा की किताबें पढ़ते रहने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करें। उन्हें कहानियों का परिचय देते रहें और पात्रों तथा चित्रों के बारे में चर्चा करें। यह पुस्तकमाला बच्चों के लिए ही है, इसीलिए बच्चों को देते समय किताबों के फटने या खराब होने की चिंता न करें।

शिक्षकों को यह प्रयास करना है कि बच्चे कहानियों को स्तरवार पढ़ें, यानि पहले स्तर की दस कहानियाँ पढ़ने के बाद वे दूसरे स्तर की कहानियाँ शुरू करें और इस तरह क्रमवार चौथे स्तर तक जाएँ। हालाँकि बरखा की कहानियाँ चार स्तरों में बाँटी गई हैं फिर भी शिक्षक इस वर्गीकरण को एक कठोर नियम न मानें और अगर कोई बच्चा चौथे स्तर की किताब पहले उठा लेता है तो उसे डाँटें-फटकारें नहीं। अगर कोई बच्चा एक ही कहानी को बार-बार पढ़ना चाहता है या तीसरे स्तर पर पहुँचने के बाद फिर से पहले स्तर





की कहानियाँ पढ़ना चाहता है तो शिक्षक इससे परेशान न हों। ऐसा होना बहुत ही स्वाभाविक है। कुछ कहानियाँ पढ़ लेने के बाद बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ जाता है और बच्चा स्वतः ही उन कहानियों को बार-बार पढ़ने का मज़ा लेना चाहता है, जो उसने पहले पढ़ी थीं। उसे यह आशा रहती है कि इस बार वह उन कहानियों को पहले की तुलना में ज़्यादा अच्छी तरह समझ सकेगा। इसलिए शिक्षक बच्चे की पहले पढ़ी हुई कहानियों को बार-बार पढ़ने की चाह को एक उत्साहवर्धक सूचक की तरह लें। यह चाह इस बात का प्रतीक है कि बच्चा अपने विकास के लिए खुद निर्णय ले रहा है और विश्वास के साथ कदम बढ़ा रहा है। शिक्षकों से उम्मीद है कि वे लचीलापन बरतते हुए बच्चों को बरखा की कहानियाँ पढ़ने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा प्रोत्साहित करेंगे।







## क्रमिक पुस्तकमाला की कहानियाँ

कथावस्तु	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4	चरित्रों के नाम
रिशते	रानी भी मुन्मुन् और मुन्	ऊन का गोल हिथ हिथ हिथकी	मीमी के मोड़े मेरी वैसी	पीन्तु की गुल्लि पानी का थरम	रमा और रानी
पशु-पक्षी कौट-पत्तने	गोह मिठाई	मांनो बिपटी का फूल	कूदती पुरयें तालव के मड़े	पुन्नी और मुन्नी मिमी के लिए क्या नुं?	काजल और पाधय
बाइय बंत्र, खेस खिलीने	गुल्लि-डंडा छुपन-छुपई	जीत की पीपरी आउट	बकली का बजा सुता	पला पीपनी बवरै तबला	जीत और बकली
आस-घास	महा आ गया मिले का गुब्बारा	हमारे पलांग सरका	मिली के बल तोसिया का सगन	मिली की सड़किल पका आम	तोसिया और मिली
खाने की चीजें	मीठे-मीठे गुल्लुले फूली रोटी	पसल चावल	चाप गोलगर्भ	खैरू छटा	जमाल और मदन





# Barkhaa

**Graded Reading Series  
for Children of Classes I and II**



पढ़ना है समझना

READING DEVELOPMENT CELL

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



# Barkhaa

## Graded Reading Series for Children of Classes I and II

When children take admission in Class I they already know the meanings of several words. Children recognise things in their practical context and know the syntax of their home language very well. This foundation becomes available to the school ready-made in every child. By treating this foundation as a pedagogic base, the school can teach reading-writing to every child in a few months. But it does not happen in most cases. We are familiar with the reality that most children coming to our schools do not become readers. Even in Class V many children remain stuck on recognising letters and the ones who somehow learn to read do not really become successful readers in a true sense. By this we imply that the habit of reading and the desire to seek joy in reading do not get developed.





We now need to stop this continuous failure of schools and we can do that. If we give space to children's own knowledge and experiences in the class while teaching them how to read, then they will learn to read as easily as they learn to speak at home. Every child can learn to read with meaning within the first few months of schooling. All we need is a rigorous effort and freedom from the grip of the letter-sound approach to be able to think from a fresh perspective. NCERT has taken an important step in this direction. A 'Graded Reading Series' titled Barkhaa has been developed in sync with children's innate cognitive capacities. The conceptual basis of this series is that **if children read with meaning and pleasure from the start itself, they will learn to read quickly and will become successful readers.** A graded reading series is a pedagogic tool which will help the children of Classes I and II in learning reading and to arouse in them the urge to read more and more.

### HOW DO CHILDREN LEARN TO READ?

Prediction plays a very important role in the process of





reading. Beginning from the first day of school children must get ample opportunities to predict the text when they learn to read. It does not generally happen. In the initial primary classes children are only taught to match letters with sounds. It is assumed that the children will gradually learn to read by establishing a link between letters and sounds. Even if children manage to pick-up reading by joining letters, they still do not become successful readers; leave alone developing an opinion about the text. One reason for this failure is that we never pay sufficient attention to train children in the skills of prediction. If a child tries to read using her/his innate capacity to predict she/he is discouraged.

An effort has been made in Barkhaa for children to get plentiful opportunities of prediction while reading the stories of this graded series. Children will also be able to use their experiences, pragmatic knowledge and awareness of spoken language while making predictions about the text. Therefore, all the stories of Barkhaa have been developed on the basis of children's everyday experiences. The skill of reading makes an important contribution in cognitive development





children. When children get lots of books to read on their own, not only will they develop reading capabilities but will also benefit cognitively in every area of school knowledge.

### **FORMAT OF BARKHAA STORIES**

Barkhaa has forty stories across four levels spread out in five themes. The number of sentences and the complexity of the plots in the stories increase as we move upwards across the levels. There are two central characters in every theme and the stories have been presented through their perspective. Jamaal and Madan are neighbours who take lot of interest in food. Similarly, Rama and Rani are sisters who feel warmly related with every thing and person around them and pay attention to the finest details of people's activities or actions. Kajal and Madhav are siblings and through them we can experience the pleasure that children get by observing and by being with birds and animals. In the stories of Jeet and Babli we learn about children's indigenous games and interesting strategies used by them to play those games. Tosia and Mili are friends and like any other girl both want to learn about each and every thing in





of their surroundings and do not bother much if things fall or break, on the other hand they find an opportunity of playing in such events.

There are four levels in the stories of Barkhaa. Gradation across levels has been achieved by variation in syntax, number of words and number and complexity of sub-plots. As we go higher across the levels the number of sentences and sub-plots in the stories increase.

**First level** -There are ten stories at this level. Every theme has two stories. Each story has one sentence with an illustration on every page. Only one event takes place or one problem is solved in the entire story. There is a lot of repetition in the syntax which helps children recognise words.

**Second Level** -There are ten stories at this level too. There are two stories of each theme having two text sentences on every page. The number of words has been increased. There are illustrations on every page at this level as well. Here, too there is repetition in the syntax; however it is less than the first level. At this level also the stories revolve around one event or a problem.







**Third Level** - At this level too there are ten stories in all, with two from every theme. However there are three sentences on each page of the book and the number of words has been increased as compared to the second level. Two to three smaller events or sub-plots have been developed within the main plot. There are illustrations on every page to give flight to children's imagination.

**Fourth level** - There is one illustration and four sentences on every page of all the ten stories of this level. Stories have two to three plots which lead to increase in the number of words. There is a repetition in the plots but very little in the syntax.

After completing all the stories of the previous level, when children will pick up the stories of the next level, they will themselves feel motivated to read further. If a child wishes to he/she will have the freedom to re-read the previously read books as many times as they want. There is a pedagogical advantage in re-reading the previously read text, but this kind of flexibility is rarely given in the text available in our schools. This flexibility not only enables children to





develop a confidence that she could understand a previously read text better, but she also gets an opportunity to understand several concepts from newer perspectives.

### **CHILDREN'S EVERYDAY EXPERIENCES WITH BARKHAA**

*Barkhaa* stories have been knit around children's contexts and their everyday experiences.

By seeing the reflections of their own experiences and contexts, the children will get support in reading by predicting the text. All the characters of *Barkhaa* are small children who are of our intended readers' age. The aspect that received a lot of attention and consideration, while developing the stories of *Barkhaa*, is that every story revolves around a small event or a thing which the children of this age-group find very interesting and exciting. Events have been expanded from children's perspective. Unlike grown-ups, children do not get anxious to clean the mess if something drops on the floor. They become immensely happy if they spot a bird's egg and assume the responsibility of saving it from cats and dogs. Whatever children do in





such situations is the main element of these stories.

### REPETITION IN THE STORIES

Familiar contexts have been used in the stories so that the children can relate with them and can identify with the characters. While understanding the stories through illustrations when children will pay attention to the text beneath they will on their own understand what is written there. Along with understanding the story, children will pick up a few simple sentences easily. All the sentences in *Barkhaa* are of spoken language. This will enable the children to establish a link between spoken and written language. They will learn in a tacit way how to write the spoken word or idea.

### STORY IN ILLUSTRATIONS

An illustration has been given on all the pages of *Barkhaa* across the four levels. In the initial phase of schooling when children cannot read the written text they will understand the stories with the help of illustrations. It is with this expectation that a special effort has been made in developing illustrations for *Barkhaa*. They have not been limited to the





events of the stories. They are made more lively and close to reality. This will help children in deriving joy from illustrations, understanding the stories and getting opportunities to talk and discuss about various things. Children have been presented with dignity and grace in these illustrations. Their innocence has neither been exaggerated nor trivialised.

Often images of children are clichéd in stories, but in *Barkhaa* their representation has been realistic and true to life. This will enable the intended readers to relate with the stories and find a reflection of their own life in them.

### **MORALS AND VALUES THROUGH LANGUAGE**

It is widely believed that children must learn a lesson out of whatever they read. While evolving the conceptual framework and developing these stories a conscious attempt was made to resist the general adult impulse of teaching values to children. Life's naivety and children's small joys and pleasures have been woven lucidly in the language of *Barkhaa*. Language is a treasure in itself. Its





biggest challenge is to provide expression to children's experiences and touch their hearts. Every child wants to be brave, face dangers with courage, be fearless in difficult circumstances and confident while presenting her viewpoint in front of adults. All children engage in such small endeavours all the time in their lives. It is this aspiration and innocence of children which has been recognised in *Barkhaa*.

Values have been woven in subtle manner in *Barkhaa* stories so as to sensitise children naturally. For example, Jeet's desire to learn his father's skills of playing a *tabla*, in the story *Tabla*, is a commendable value in itself. In *Nanee ka Chashmaa*, the concern and dedication with which Rama looks for her grandmother's pair of reading glasses, conveys the sensitivity of a small child towards an old person. In *Talab ke Maje Kajal and Madhav* reassure themselves that the egrets will come back next year when both of them see the birds flying away. In this story the ideals of waiting for somebody, understanding nature's cycle and accepting others with their peculiarities emerge on their own. Such values are natural part of children's life . Children's innocence,





their honesty, the pervasive desire to learn something new, a longing for love and the energy to do everything on their own are some of the biggest values and innate morals through which teachers and parents will understand children's ethics.

### READING RESOURCES

In the third chapter of *National Curriculum Framework (2005)* a recommendation has been made under the title *Why don't children learn to read?* that the classroom needs to provide a print rich environment displaying signs, charts, work-organising notices, etc. that promote 'iconic' recognition of the written symbols, in addition to teaching letter-sound correspondence. At present our education system is suffering from a deprivation of these above mentioned resources which are essential for children's development. Children of resourceful families get such facilities at home in the normal course, such as – books, magazines, newspaper and family member's habit of reading them regularly. Children from poor families and rural areas generally remain deprived of such resources. By placing the reading-series of forty stories in Teachers have to make an effort to ensure that children





classrooms we can compensate for this deprivation. Seeing their wards getting a reading-series will generate a new faith in parents that there is plentiful reading-material available for children. *Barkha* series will help children develop a reading habit for their own happiness and enable them to become life-long readers.

### THE ROLE OF TEACHERS

*Barkhaa* graded reading series has been developed with this thought that it will assist teachers in meeting some curricular goals. It has to be particularly kept in mind that the reading-series is not a textbook. Teachers can see this series as a complementary pedagogic material which needs to be given to children for reading. Teachers are expected to place this reading-series in such a manner in the classroom that the children will have easy access to it. Teachers must constantly encourage children to keep reading the stories of *Barkhaa*. They should introduce children to the stories and regularly hold discussions about the characters and the illustrations. The reading-series is especially made for children, therefore, do not panic about wear and tear while giving it to them.







read the books level-wise which means that they proceed to the next level only after reading all the ten stories of the previous level and finally reach the fourth level in this manner. Although *Barkhaa* stories have been divided in four levels yet teachers should not treat this classification as a hard and fast rule. Do not scold or snub a child if she picks up a fourth-level book before others. Teachers should not get worried if a child wants to read a book repeatedly or wants to go back to the first level books even after reaching the third level. It is natural for this to happen. A child's confidence builds after reading a few stories and then she herself wants to derive joy by reading previously read stories again and again. She remains excited that she can understand those stories better as compared to how she understood earlier. Therefore, it is necessary that the teachers take the children's desire to re-read certain books as a motivational signifier. The greatest implication of a child's desire to re-read is that the child is judging her own progress and is moving ahead with poise and determination. Teachers are expected to encourage children to read *Barkhaa* stories while remaining flexible in their orientation.





## Stories of Graded Reading Series-Barkhaa

Theme	Level 1	Level 2	Level 3	Level 4	Characters
Relationships	<i>Ramni Bhai</i> <i>Manmurt aur</i> <i>Mammi</i>	<i>Oor Ki Gudi</i> <i>Hii! Hii! Hii!ki</i>	<i>Manno Ki Mipi</i> <i>Mere Jete</i>	<i>Pede Ki Gudi</i> <i>Nani Ki Chudhri</i>	Rama and Rani
Birds-Animals	<i>Toot</i> <i>Mithun</i>	<i>Moni</i> <i>Titi</i>	<i>Kandhi Jirashahi</i> <i>Talab Ki Maji</i>	<i>Chaver aur Manvi</i> <i>Mimi Ki Laji</i> <i>Kaj Loni?</i>	Kajal and Madhav
Musical Instruments, Games and Toys	<i>Gudi-Dandi</i> <i>Chhoti Chhoti</i>	<i>Jai Ki Pappan</i> <i>Out</i>	<i>Babli Ki Baja</i> <i>Jhale</i>	<i>Choti Pappan</i> <i>Banayin</i> <i>Table</i>	Jeet and Babli
Around Us	<i>Majhi aur Geta</i> <i>Mii Ki Golihari</i>	<i>Honorey Bhatag</i> <i>Sherbat</i>	<i>Mii Ki Bani</i> <i>Toni Ki Sapna</i>	<i>Mii Ki Citi</i> <i>Pokas-Aan</i>	Tosia and Mili
Food	<i>Muche Munde</i> <i>Gajjab</i> <i>Phandi Roti</i>	<i>Patel</i> <i>Chawal</i>	<i>Chai</i> <i>Colpette</i>	<i>Gebhu</i> <i>Batta</i>	Jamaal and Maan



# क्रमिक पुस्तकमाला - बरखा की कहानियाँ

मीठे-मीठे  
शुल्लभुले

फली रोटी

चावल

पतख

चाय

बोल्लनप्ये

भुट्टा

भेड़ें

धुपन-धुपाई

बिल्ली-डंडा

आउट

छीत की  
पीपनी

बबली  
का बाजा

झूला

चलो पीपनी  
बनाउँ

तबला

मिठाई

तोता

चिमटी  
का फूल

तोनी



